

## टीआईटी, भिवानी में 09 अक्टूबर 2026 को “मानक, वस्त्र क्षेत्र में सतत विकास के प्रेरक हैं” विषय पर गुणवत्ता अभियान

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) के वस्त्रादि विभाग ने हरियाणा शाखा कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विश्व मानक दिवस 2026 की थीम के अनुरूप “मानक, वस्त्र क्षेत्र में सतत विकास के प्रेरक हैं” विषय पर 09 अक्टूबर 2026 को द टेक्नोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्स्टाइल्स एंड साइंसेज (TIT&S), भिवानी में एक गुणवत्ता अभियान का आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य फोकस **सतत विकास लक्ष्य (SDG) 7 – सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा** पर था। कार्यक्रम में टीआईटी, भिवानी के लगभग 150 विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ **डॉ. अश्वनी गोयल, विभागाध्यक्ष, वस्त्र प्रौद्योगिकी विभाग, टीआईटी, भिवानी** के उद्घाटन संबोधन से हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों को मानकीकरण एवं सतत विकास से प्रारंभिक स्तर पर परिचित कराने के महत्व पर बल दिया तथा कहा कि ये विषय उनके भविष्य के व्यावसायिक जीवन और औद्योगिक कार्यक्षेत्र में आने वाली वास्तविक चुनौतियों से सीधे जुड़े हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को इन उभरते क्षेत्रों की व्यावहारिक उपयोगिता से परिचित कराने हेतु बी आई एस द्वारा आयोजित इस ज्ञानवर्धक सत्र की सराहना भी की।

कार्यक्रम के दौरान **श्री जे. के. गुप्ता, प्रमुख (वस्त्रादि विभाग)** ने “वस्त्र क्षेत्र में मानकीकरण की स्थिति” विषय पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने विद्यार्थियों को वस्त्र क्षेत्र में मानकीकरण की वर्तमान स्थिति से अवगत कराते हुए प्रकाशित भारतीय मानकों, निर्माणाधीन मानकों तथा वार्षिक मानकीकरण कार्यक्रम (APS) 2026–27 के अंतर्गत चिन्हित प्रमुख विषयों की जानकारी दी। सैद्धांतिक चर्चा से आगे बढ़ते हुए उन्होंने शेड नेट, जियोसेल, सैनिटरी नैपकिन तथा बुलेटप्रूफ जैकेट जैसे उत्पादों से संबंधित मानकों की तकनीकी आवश्यकताओं एवं व्यावहारिक महत्ता को समझाया। इन वास्तविक उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि मानक उत्पादों की गुणवत्ता, सुरक्षा, कार्यक्षमता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के साथ-साथ वस्त्र उद्योग की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि वस्त्रादि विभाग द्वारा तकनीकी वस्त्रों के सभी 12 खंडों को समाहित करते हुए **600 से अधिक भारतीय मानक** प्रकाशित किए जा चुके हैं। उन्होंने मासिक धर्म स्वच्छता, वस्त्र, प्राकृतिक रंगों एवं जियोसिंथेटिक्स जैसे क्षेत्रों से संबंधित आई एस ओ तकनीकी समितियों में भारत की सक्रिय भागीदारी तथा तकनीकी वस्त्रों और संबंधित उत्पादों के लगभग 88 भारतीय मानकों को समाहित करने वाले गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों (QCOs) के कार्यान्वयन की जानकारी भी दी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मानक निर्माण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने तथा शिक्षाविदों, नियामक निकायों, उद्योग, उपभोक्ताओं एवं अन्य हितधारकों के साथ सहयोग को सुदृढ़ करने हेतु BIS द्वारा की गई विभिन्न पहलों एवं प्रक्रियागत सुधारों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वस्त्र क्षेत्र में मानकीकरण एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर भी बल दिया।

**श्री हिमांशु शुक्ला, वैज्ञानिक-सी, वस्त्रादि विभाग** ने “सतत विकास को संबोधित करना: वस्त्र क्षेत्र में मानक निर्माण की प्रक्रिया में प्रतिमान परिवर्तन” विषय पर प्रस्तुति दी। उन्होंने वस्त्र मूल्य श्रृंखला में सतत विकास को बढ़ावा देने में मानकीकरण की भूमिका तथा नए एवं मौजूदा भारतीय मानकों में सतत विकास के सिद्धांतों को समाहित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि लगभग **170 भारतीय मानकों में सतत विकास से संबंधित प्रावधान** शामिल हैं। इनमें प्राकृतिक रेशे, हथकरघा, खादी, जूट, कॉयूर, प्राकृतिक रंग, पुनर्चक्रित पॉलिएस्टर रेशे एवं यार्न, ऊनी शॉडी यार्न तथा पुनः उपयोग योग्य स्वास्थ्य सेवा संबंधी वस्त्र उत्पाद आदि शामिल हैं।

उन्होंने वस्त्र अपशिष्ट पुनर्चक्रण, प्राकृतिक रंगों तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी विनिर्माण से संबंधित जारी मानकीकरण गतिविधियों की भी जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने BIS के **सतत विकास संबंधी परामर्श समूह** के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उपभोक्ता-पूर्व एवं उपभोक्ता-पश्चात वस्त्र अपशिष्ट के पुनर्चक्रण, डेनिम, टायर कॉर्ड एवं कृषि वस्त्रों जैसे उत्पादों के मानकों में पुनर्चक्रित सामग्री को शामिल करने तथा GOTS, OEKO-TEX, ZDHC और bluesign जैसे अंतरराष्ट्रीय सतत विकास एवं प्रमाणन ढाँचों के अनुरूप भारतीय मानकों को विकसित करने की प्राथमिकताओं से अवगत कराया।

**सुश्री शिखा दावर, वैज्ञानिक-ई, हरियाणा शाखा कार्यालय** ने बी आई एस की अनुरूपता मूल्यांकन योजना पर प्रस्तुति दी। उन्होंने बी आई एस द्वारा संचालित विभिन्न अनुरूपता मूल्यांकन योजनाओं, लाइसेंस प्रदान करने की प्रक्रिया, वस्त्र क्षेत्र पर लागू गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों (QCOs), लाइसेंस आवेदन हेतु आवश्यक दस्तावेजों तथा मानक ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से बी आई एस लाइसेंस के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने अनुरूपता मूल्यांकन प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए बी आई एस द्वारा हाल ही में की गई पहलों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम के दौरान आयोजित संवादात्मक सत्र में प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

समापन संबोधन में **श्री जे. के. गुप्ता** ने संकाय सदस्यों एवं शोधार्थियों को बी आई एस की तकनीकी समितियों, पैनलों तथा कार्यकारी समूहों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने जोर दिया कि उनकी सक्रिय भागीदारी से प्रासंगिक एवं भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय मानकों के विकास में योगदान मिलेगा तथा सतत वस्त्रों के क्षेत्र में भारत की वैश्विक स्थिति और सुदृढ़ होगी।

### **Quality Campaign on “Standards are the Drivers for Sustainability in the Textile Sector” at TIT&S, Bhiwani on 09 October 2026**

Textiles Department (TXD), BIS, jointly with the Haryana Branch Office (HRBO), organized a quality campaign on **“Standards are the Drivers for Sustainability in the Textile Sector”** in line with the theme of World Standards Day 2026, with a focus on **SDG 7 – Affordable and Clean Energy**, at The Technological Institute of Textile & Sciences (TIT&S), Bhiwani, on 09 October 2026. The programme was attended by around 150 students and faculty members of TITS, Bhiwani.

The programme commenced with opening remarks by **Dr. Ashwani Goyal, Head of the Department of Textile Technology, TIT&S, Bhiwani**. He emphasized the importance of familiarizing students with standardization and sustainability to prepare them for real-world industrial challenges. He also appreciated BIS for organizing this insightful session, providing students with valuable exposure to these emerging areas and their practical relevance to the textile industry.

During the session, **Shri J. K. Gupta, Head (Textiles), BIS**, delivered an insightful presentation on **“Status of Standardization in the Field of Textiles.”** He familiarized students with the current landscape of textile standardization, highlighting important published Indian Standards, standards under development, and key subjects identified under the Annual Programme for Standardization (APS) 2026–27. Taking the discussion beyond theory, he

explained the technical requirements and practical significance of standards for products such as shade nets, geocells, sanitary napkins and bulletproof jackets. Through these real-world examples, he helped students appreciate how standards ensure product quality, safety, performance and reliability, while demonstrating the vital role of standardization in addressing the evolving needs of the textile industry.

He further informed that TXD has published over **600 Indian Standards covering all 12 segments of technical textiles**. He also briefed the participants on India's active engagement in relevant ISO Technical Committees covering areas such as menstrual hygiene, textiles, natural dyes and geosynthetics, along with the implementation of Quality Control Orders (QCOs) covering approximately 88 Indian Standards for technical textiles and allied products. Additionally, he apprised the participants of various initiatives and process reforms undertaken by BIS to streamline standards formulation and strengthen collaboration with academia, regulatory bodies, industry, users and other stakeholders, emphasizing the importance of collective efforts in advancing standardization and innovation in the textile sector.

Shri Himanshu Shukla, Sc-C, TXD, delivered a presentation on “**Addressing Sustainability: A Paradigm shift in Standards Formulation in Textiles**” highlighting the role of standardization in promoting sustainability across the textile value chain and the importance of integrating sustainability principles into new and existing Indian Standards.

He informed the participants that approximately 170 Indian Standards incorporate sustainability-related provisions, covering natural fibres, handloom, khadi, jute, coir, natural dyes, recycled polyester fibres and yarns, woollen shoddy yarn, reusable healthcare textiles etc. He also discussed ongoing standardization activities relating to textile waste recycling, natural dyes and environmentally responsible manufacturing. Additionally, he outlined the work of the BIS Consultative Group on Sustainability, focusing on recycling pre- and post-consumer textile waste, incorporating recycled materials into standards for products such as denim, tyre cords and agrotextiles, and aligning Indian Standards with international sustainability frameworks, including GOTS, OEKO-TEX, ZDHC and bluesign.

Smt. Shikha Dawar, Scientist-E, BIS Haryana Branch Office, delivered a presentation providing an overview of the **BIS Conformity Assessment Scheme**. She explained the various conformity assessment schemes operated by BIS, the procedure for grant of licences, QCOs applicable to the textile sector, documentation required for licence applications, and the process of applying for a BIS licence through the Manak Online portal. She also briefed the participants on recent initiatives undertaken by BIS to improve conformity assessment processes.

During the interactive session, various queries raised by participants were addressed.

In his concluding remarks, Shri J. K. Gupta encouraged faculty members and research scholars to actively participate in BIS technical committees, panels, and working groups. He emphasized that their involvement would contribute to the development of relevant and forward-looking Indian Standards and strengthen India's global positioning in the field of sustainable textiles.









